नाम — डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसोसियेट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय — राजनीति-शास्त्र
कक्षा — बी. ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट — 03 ; सत्र 2019-20
पेपर — 08 ; दिनांक —

टॉपिक — क्रांतिकारी आंदोलन की तात्कालिक असफलता के कारण —

क्रांतिकारियों द्वारा व्यापक तौर पर राष्ट्रीय चेतना जगी किंतु यह मूल लक्ष्य को तत्काल प्राप्त करने में असफल रहा जिसके कारण निम्न रूपों में व्यक्त किये जा सकते हैं—

(1.) केन्द्रीय संगठन का अभाव — केन्द्रीय संगठन के अभाव में विभिन्न प्रांतों के क्रांतिकारी नेताओं में पारस्परिक सहयोग और संबंधों का अभाव रहा जिससे वे संगठित रूप से कार्य न कर सके।

(2.) आंदोलन का नवयुवकों तक सीमित होना — क्रांतिकारी आंदोलन की असफलता का एक कारण इस आंदोलन का मध्यम वर्ग के शिक्षित नवयुवकों तक ही सीमित होना था। जनता पर इसका विशेष प्रभाव नहीं होने के कारण वे आम जनता से सहयोग तथा समर्थन प्राप्त नहीं कर सके।

(3.) उच्च मध्यम वर्ग की सहानुभूति का अभाव — इस वर्ग का सहानुभूति के अभाव के साथ-साथ ये इनके कार्यों को घृणा की दृष्टि से देखते थे और स्वराज्य प्राप्त करने के लिये वे धार्मिक उपायों में विश्वास करते थे।

(4.) ब्रिटिश सरकार की कठोर दमन नीति — ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिये कठोर नीति अपनाई। 1907 में सभायें करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 1908 में विद्रोही सभा अधिनियम, फौजदारी कानून को कठोर बनाना और सख्ती से प्रयोग, जूरी में यूरोपियन बहुमत, मामूली अपराधों के लिये कठोरतम दंड आदि से ऐसा आतंक स्थापित हुआ जिससे क्रांतिकारी दूर भागने लगे।

(5.) अस्त्र-शस्त्रों की प्राप्ति में कठिनाई — क्रांतिकारियों के पास उत्साह और साहस अदम्य था किंतु साधनों का नितांत अभाव था। उनके लिये अस्त्र-शस्त्रों की प्राप्ति काफी कठिन था और सरकार की सतर्कता काफी ज्यादा थी।

(6.) कांग्रेस की उदासीनता — कांग्रेस की उदासीनता के कारण क्रांतिकारियों को इस संस्था से सहानुभूति नहीं मिल सकी उल्टे उन्हें इस संस्था से आलोचना और विरोध ही प्राप्त हुआ। इससे उन्हें जनसमर्थन में भी मदद नहीं मिली।

(7.) महात्मा गांधी का सत्याग्रह आंदोलन — महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीति में आकर सत्याग्रह के रूप में जनता के सम्मुख क्रांतिकारी आंदोलन का विकल्प प्रस्तुत किया जो भारतीय जनता में अधिकाधिक लोकप्रिय होता गया। इससे क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति लोगों के रुझान को समाप्त प्राय कर दिया जिससे वह अंततः समाप्त हो गया।

उपर्युक्त कारणों के चलते क्रांतिकारी आंदोलन अपना लक्ष्य प्राप्त करने में असफल रहा। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के शब्दों में, 'क्रांतिकारी आंदोलन की विफलता का मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार की दमननीति थी तथा हिंसा के प्रति हिंदुओं की प्रवृति के प्रति भूल थी।'